Azado Ka Amrit Mahotsav

GRAMIN KRISHI MAUSAM SEWA

BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY

(ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)

India Meteorological Departmet, Meteorological centre Ranchi receive forecast data from Ministry of Earth Science New Delhi Government of India for Zonal Research Station Darisai under Birsa Agricultural University for the next 120 hours

And

Agromet Advisory Service Bulletin for *East Singhbhum*

(28 Jan-01 Feb 2023)

Ref :27/2023/GKMS/Darisai(08)
Date: 27.01.2023
Web : bauranchi.org

Ph No. –9334729740(m)
binodranchi@gmail.com

Azado Ka Amrit Mahotsav

मौसम इकाई/दिनांक	28 जनवरी	29 जनवरी	30 जनवरी	31 जनवरी	01 फरवरी
वर्षा (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (⁰C)	32	31	31	32	32
न्यूनतम तापमान (⁰C)	17	15	15	17	15
आकाश मे बादल की स्थिति	0	1	2	4	0
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत्)	62	53	50	49	49
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत्)	30	30	26	26	22
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	6	5	4	5	6
हवा बहाव की दिशा	307	79	155	307	319

साप्ताहिक वर्षापात एवं तापमान अनुभूति (01 - 07 Feb 2023 तक)

साप्ताहिक वर्षापात दृष्टिकोण	वास्तविक वर्षा– n/a (मि० मी०/दिन)	सामान्य वर्षा– n/a मि० मी०/दिन)	प्रतिशत विचलन – (n/a) n/a ;श्रेणी (n/a)
वास्तविक अधकतम तापमान दृष्टिकोण	वास्तविक अधकतम तापमान –- 27.88⁰ C/दिन	सामान्य अधकतम तापमान –- 26.21⁰ C/दिन	विसंगति – (+) 1.67; श्रेणी (औसत से ऊपर)
वास्तविक न्यूनताम तापमान दृष्टिकोण	वास्तविक न्यूनताम तापमान – 11.35⁰ C/दिन	सामान्य न्यूनताम तापमान –- 12.02⁰ C/दिन	विसंगति – (+) 1.30; श्रेणी (औसत के बराबर

उपरोक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

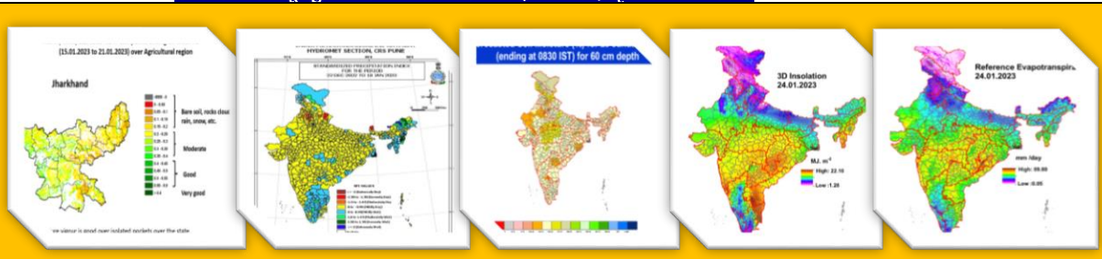

(क्षेत्रीय अनुसन्धान केंद्र , दारीसाई, पूर्वी सिंहभूम) बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, काँके, राँची

मान्यकृत वनस्पति अंतर सूचकांक (21.01.2023 तक)- झारखण्ड राज्य में आछादित वनस्पति का प्रतिशित क्षेत्रफल एवं इसका घनत्व बढ़ने के साथ हीं साथ फसल, वनस्पति वद्धि अवस्था में है मानकीकृत वर्षापात सुचकांक (19.01.203 तक)- के अनुसार मृदा की नमी अवस्था मध्यम सूखे की ओर अंकित हो रहा है अतः उन स्थानों पर मौसम एवं प्राकृतिक संसंधनों की अनुकूलता के सुसार सिंचाई की व्यवस्था की जा सकती है | मृदा आद्रता सुचंकाक(29.01.2023 तक) के अनुसार मृदा में नमी की स्तिथि 15 प्रतिशत के करीब रहने कि संभावना जताई गयी है | अंत: मौसम के अनुरूप रबी फसलों एवं सब्जियों में आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई का प्रबंध किया जा सकता है | सूर्य विकिर(24.01.2023 तक) के अनुसार सभी स्थानों पर मध्यम से अधिक मान की ओर दर्शा रहा है | जिसका तात्पर्य आसमान में उस अवधी तक आंशिक बादल रहने तथा मृदा नमी क्षेत्र जल धारण क्षमता सामान्य होने के कारण वातावरण में नमी की भी मात्रा सामान्य है एवं विकिरण का मान मध्यम से अधिक मान कि और है,जिसका सीधा अनुमान संदर्व वाष्पन- उत्सर्जन (24.01.2023 तक) के पूरक है | जिसका तात्पर्य वातावरण एवं मृदा से नमी का वात्पोत्सर्जन का मान माध्यम से अधिक के बीच दर्शा रहा है | अतः फिलहाल खड़े फसल एवं सब्जयों जल प्रबंधन की आवश्यकता अनुसार ध्यान दिया जाना चाहिए | समुचित फसल प्रबंधन करें | सभी कृषि से सम्बंधित क्रिआकलापों को मौसम के सनुरूप करें | सुझाव का अनुपालन करें |

संकेत : मौसम पूर्वानुमान के अनुसार मौसम साफ़ रहने की संभावना है | दिन एवम् रात के तापमान में बढ़त तथा सुबह एवम् शाम के वक्त हवा मे नमी आगे के दिनों में घटने की सम्भावना है । अतः आद्रता में उतार-चड़ाव होना, विषाणु, रोगाणु एवं कीट का बढ़ना सुनिश्चित है। अतः निकाई-गंड़ाई, सिंचाई, दवा का छिड़काव एवम् खाद का भुरकाव व सुगमता को देखते हुए कार्य को पूरा करें। सब्जियो जैसे- आलू, टमाटर, बैंगन, गोभी, मटर एवम् फलों में तथा मवेशियों के बच्चों पर रात एवम् सुबह ठंड़ एवम् कुहासे के प्रतिकूलता से बचाव हेतु उपाय करें। अतः निचे दिये गए सभी सुझाव मौसम को ध्यान में रखते हुए करें। | **साप्ताहिक वर्षापात एवं तापमान अनुभूति (01 - 07 Feb 2023 तक) के अनुसार मौसम शुष्क एवं मृदा में नमी सामान्य से निचे रहने की संभावना है | फसल में सिंचाई की आवश्यकता है | रबी फसल की खेती हेतु निकाई एवं गुराई के लिए उपयुक्त समय है | मृदा में उपलब्ध नमी एवं तापमान की अनिभूति को देखते हुए सिंचाई की सुविधा होने पर चारा फसल जैसे – मक्का, बरसीम, लुसर्न एवं जई की बुवाई की जा सकती है | सिंचाई, दवा का छिडकाव , खाद का भुरकाव किया जा सकता है |**

| विशेष के पूर्वानुमान और चेतावनी के लिए MAUSAM APP, कृषि परमर्श के लिए MEGHDOOT APP और ठनका चेतावनी के लिए DAMINI APP डाउनलोड करें

सामान्य सलाह फिलहाल फसलों में नमी बरकरार रखने के लिये आवश्यकतानुसार सिंचाई मौसम को देखते हुए करें। छोटे फलदार पौधों, नर्सरी के पौधों एवम् नगदी सब्जी वाले फसलों को पोलीथिन, बाॅंस का टाट सें सुबह के वक्त बाॅंधें और दिन में टाटियाॅ हटा लें। हाल में लगाए गए सब्जी पौधशाला केा रात में पोलीथिन या पेपर से ढ़क दें। धान बिचड़ों की अच्छी बढ़त हेतु गांबर खाद के साथ 4 कि० ग्रा ० प्रति 400 वर्ग मीटर या 10 डिसमिल के हिसाब से 12-15 दिन के बिचड़ो में भुरकाव करें। तलाब में मछलियों को ठंड से बचाव हेतु 100 कि० ग्रा ० बुझा चूना प्रति एकड़ तालाव के क्षेत्रफल के हिसाब से एवम् 1-1.5 मी० पानी की गहराई को बरकरा रखें। बाछियों एवम् मेंमनो को बोरे से लपेट दें। रखे गये पशुओं के स्थान में आग एवम् धुआॅं करें। मेंमनों में नियमोनिया पी पी आर बीमारी से बचाव के लिये टीकाकरण करें। आहार में मित्रल मिक्सचर दें। मुर्गियों के रहने के स्थान को गर्म करने हेतु पोलीथिन या बोरे से ढ़क कर हवा आवागन हेतु प्रबध करें। **सब्जियां:** मिर्च में थ्रिप्स और घुन के संक्रमण के प्रबंधन के लिए, 2% नीम के तेल के इमल्शन या 1 ग्राम थियामेथोक्साम प्रति 5 लीटर या डायफेनथियूरोन @ 1.5 ग्राम या प्रोफेनोफॉस @ 2 मिली प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें। शाम के समय नर्सरी, नई फलों की फसल और सब्जियों की फसलों में सिंचाई करें। कम तापमान के प्रभाव से बचने के लिए गोभीवर्गीय फसलों में हाल ही में लगाई गई फसलों को रात के समय सेल्यूलोज पेपर से ढक दें। युवा उद्यानिकी एवं पुष्पीय पौधों को कम तापमान से बचाने के लिए थैचिंग करें | फूलगोभी, पत्तागोभी, ब्रोकली, नोलखोल, बैंगन, मूली, फलियाँ, पत्तेदार सब्जियों में हल्की सिंचाई करें। **तिलहन:** सरसों की फसल में जब 10-15 प्रतिशत पौधे में 30 एफिड्स प्रति 10 सेमी ऊपरी शूट में संक्रमित होने पर एफिड के हमले से नियंत्रित करने के लिए क्लोरपाइरीफॉस 20% ईसी @ 1 मिली प्रति लीटर पानी के घोल या मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी @ 3 मिली या थियामेथोक्साम 25 डब्ल्यूजी @ 3 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी के घोल का साफ मौसम की स्थिति में छिड़काव करें । **अनाज:** धान की नर्सरी को कम तापमान से बचाने के लिए गीली क्यारियों में गोबर की खाद की एक पतली परत लगायें ताकि क्यारियां अपेक्षाकृत गर्म रहें। **पालतू जानवर:** मवेशियों को आश्रय के अंदर रखें। सुबह ठंड से बचाव के लिए युवा मवेशियों की विशेष देखभाल करें। शेल्टर फ्लोर पर स्ट्रॉ लिटर फैलाएं जो गर्म प्रदान करता है। रात के समय पर्दे और बिजली के बल्ब देकर कुक्कुट पक्षियों की रक्षा करें।

- **गरमा धान-** बिचड़ो में पत्तियो के शीर्ष पर जलने एवम् भूरे रंग दिखने पर पोटाश का भुरकाव कर शाम के वक्त सिंचाई करें तथा पलवार चढ़ाएॅं। जनवरी माह में पौधशाला के लिये गरमा धान रोपाइ्र हेतु बीजों (मघ्यम अवधिः 120-125 दिन वाले किस्म जैसे-आइ आर, 64 डी आर टी 1, आइ आर, 64 सुखा, अभिशेख, के आर एच 2, पैक 801, 807जनवरी माह में पौधशाला के लिये गरमा धान रोपाइ्र हेतु बीजों (मघ्यम अवधिः 120-125 दिन वाले किस्म जैसे-आइ आर, 64 डी आर टी 1, आइ आर, 64 सुखा, अभिशेख, के आर एच 2, पैक 801, 807, एराई तेज (गोल्ड), सहभागी, बिरसा विकास धान 203 बिरसा विकास सुगन्ध 1 इत्यादि को संग्रहित कर पौधशाला में बीज गिराने से दो से तीन दिन पहले भींगे जूट के बोरे में अंकुरित होने के लिये छोड़ दें। खेत में ही रोपाई हेतु जमीन के 1/10 वें भाग में पौधशाला बनायें। मिट्टी में 100 किलोग्राम गोबर + 10-12 किलोग्राम करंज या नीम की खल्ली प्रति 400 वर्ग मीटर (एकड का 1/10 वाॅं भाग)के दर से मिलाकर बिल्कुल कदवा कर लें एवम् पौधशाला की जमीन को कुछ ऊँचा रखेंं। अंतिम तैयारी के वक्त 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के हिसाब से 2 ग्राम बैविस्टीन या ट्राइसाइक्लोजोल (बीम) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर हीं उपयोग करें। 8 किलोग्राम यूरिया + 25 किलोग्राम एस एस पी + 6 किलोग्राम एम ओ पी प्रति 400 वर्ग मीटर(एकड का 1/10 वाॅं भाग) के दर से पौधशाला हेतुं रसायनिक खाद का व्यवहार करें। 12 दिन के बिचड ¬ों में 1-1.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 400 स्क्वायर मीटर या प्रति 10 डिसीमल के दर से भुरकाव करें।
- **चना:** वातावरण में हल्के बदलाव के कारण फली छेदक कीटं का प्रकोप बढ़ता देखा जा रहा है। बचाव हेतु इमीडाक्लोप्रीड 1 मि. ली. या एसीफेट 75 प्रतिशत् घु° प° का 4 ग्राम के हिसाब से प्रति 10 लीटर पानी में घोल बनाकर फलियों के निकल जाने पर छिडकाव करंे। तीव्रता को कम करने के लिये फेनवलरेट 5 प्रतिशत् धूल या मिथाइल पाराथियन 2 प्रतिशत् धूल का 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के बक्त भुरकाव करें। फली छेदक कीट कीट निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंश 3-4 संख्या प्रति एकड़ उन खेंतों में जहाँ प्रति पौधों में 15-20 प्रतिशत् फूल खिल गये हों प्रबंधन हेतु परभक्षी चिडियों को आमंत्रण करने के लिये लकड़ी से निर्मित ज् अक्षर आकार के पक्षी बसेरा की व्यवस्था खेत के विभिन्न जगहों पर करें।
- **सरसों:** कैप्सुल बनने की अवस्था में इस मौसम लाही/थीरप्स/छोटी मक्खी कीटों का प्रकोप होने की प्रबल सम्भावना है। अतः नित्य फसल की निगरानी करते रहें। कीट की संख्या न्यूनतम् क्रांतिक संख्या से अधिक रहने पर दवा का छिड़काव करें। प्रारम्भिक अवस्था में प्रभावित भाग को काट कर नष्ट कर दें। लाही कीटों का प्रकोप से बचाव हेतु आक्सी डेमोटान मिथयल 1 मिलीलीटर या डायमेथेयेट 30 इ सी 1 मिलीलीटर या थयमेथेक्सजाम 25 डबलू जी 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में तैयार घोल का छिड़काव दोपहर के वक्त 15 दिलों के अन्तराल पर करें। कीट निगरानी हेतु 5-7 संख्या में फेरोमोन प्रपंश ;पिली चिपचिपाहाट वालीद्ध प्रति एकड़ के हिसाब से लगाए। पत्र लांछन के लिए 2.5 ग्राम मैंकोजेब एम 45 एवम् श्वेत हरदा बीमारी के लिए 1.5 ग्राम क्रिलेक्सील या बोर्डेक्स मिक्सचर या 0.25 प्रतिशत् काॅपर आक्सीक्लोराइड प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।
- **मटर:** फलों की संख्या में बढ़ोतरी के लिये 20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी घोल बना कर लत्तर पर छिड़काव करें साथ ही साथ पाले से भी बचाव होता है। दाने बनने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार-चढ़ाव के साथ-साथ तापमान में हल्की धटत एवम् बढ़त की सम्भावना होने के कारण चूर्णिल आसिता बीमारी एवम् कीटों के प्रकोप बढने की आशंका बहुत अधिक है अतः निवारण हेतु कैराथेन 0.1(1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत् (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें। प्ररोह कीट भेदक से बचाव के लिये थायमेट 10 जी 4 किलोग्रीम प्रति एकड़ के दर से व्यवहार कर सिंचाई कर दें। खड़ी फसल में मालाथियन 58 ई सी का 1 मिलीलीटर या कार्बेरिल 50 प्रतिशत् घु° प° का 2 ग्रीम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। फली भेदक से बचाव के लिये मोनेक्रोटोफास 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनो के अंतराल पर छिड़काव करें।
- **तीसी:** पौधें अभी फूलावस्था में है। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूॅंद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइप्रोडीआॅन 25 प्रतिशत् डब्लू पी + कार्बेडाजिम 25 प्रतिशतडब्लू पी जिसका बाजारु नाम डबल डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्रा° प्रति ली° में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सम्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूॅंद बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमाॅर्फ 80 प्रतिशत ई सी (केलिक्सीन) का 5 मि°ली° प्रति 10 ली° पानी या केराथेन 1 मि°ली° प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।
- **गेंहूँ : दसम्बर माह में गेंहूँ की बुआई(45-50 दिन) के लिए सामयिक सलाह -** अधिक्तम् कल्ले से लेकर तने मे गांठ बनने की अवस्था में है। खरपतवार की निकाई एवम् डच हो द्वारा गुडाई कर के ही दूसरी बार सिंचाई करने हेतु प्रबंध मौसम को दंख कर करें। इस अवस्था में निकाई-गुडाई के बाद सिंचाई कर दें तथा साथ हीं साथ सिंचाई के एक से दो दिन बाद शेष एक तिहाई, 30 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ की दर से बुआई के 40-45 दिन बाद उपरिवेशन करें। मरे हुए कल्ले के दिखने पर इमीडाक्लोप्रीड 1 मि. ली. प्रति 3 लीटर पानी या एसीटामीप्रीड 20 प्रतिशत् घु°प° का 0.5 ग्राम प्रति 8 लीटर पानी में घोल बनाकर छिटकाव करें। **नवम्बर माह में गेंहूँ की बुआई (65-70 दिन) के लिए सामयिक सलाह** - गाभा बनने से लेकर बाली निकलने की अवस्था में है। तीसरी सिंचाई का प्रबंध करें। बुआई के 60-65 दिन पहले या फूल आने से पहले 30 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड के दर से उपरिवेशन करें। अगर पत्तियों पर छोटे अण्डाकार पीला-भूरा छोटे धब्बे (पत्र अंगमारी) दिखाई देने पर डायथेन एम 45 (मेन्कोजेब) या डाइफोलटन(केपटाफाल) या इण्डोफिल एम-45 (मेन्कोजेब) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। यदि पत्तियों पर छोटे-छोटे रंगबिरंगे धब्बे दिखने पर (हरदा) प्रोपिकोनाजोल (0.1 प्रतिशत्) का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे। **नवम्बर माह में गेंहूँ की बुआई (85-90 दिन) के लिए सामयिक सलाह** -बाली में फूल आने की अवस्था है। यह अति महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में खेतों में नमी की कमी होने पर दानो का संख्या एवम् आकार में क्रमशः कमी होे जाती है। दिन के तापमान एवम् आर्द्रता में औसतन वृद्धि अनावृत कण्ड (संक्रमित पौधों की सभी बालियाॅं काले चूर्ण का रुप लेती है एवम् दाने नहीं बनते हैं) के संक्रमणता में सहायक होता है। अतः दिखाई देने पर संक्िरमत पौधें को सवधनी पूर्वक तोड़ कर भूमी में गाड़ दें या जला दें।
- **आलू:** देर से बोये गये आलू, कंद वृद्धि अवस्था से में है पिछेती अंगमारी से ग्रसित पौधे दिख रहें हों, तो बचाव के लिये 1.5 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड या डाइफोलटन(केपटाफाल) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे । कंद में इस वक्त कजरा पिल्लू का प्रकोप होने की अधिक सम्भावना है। अतः बचाव हेतु कीटनाशी जैसे क्लोरपाइरीफाॅस 20 ई सा का 2 मिलीलीटर प्रति लीटर के दर से छिड़काव पौधें के जड़ो के पास छिड़काव करें। परिपक्व कंद को निकालने से पहले पौधे के उपरी भाग को काट कर 10 दिनों तक इसी अवस्था में छोड़ दें ताकि कंद के छिलके मोटे होने के साथ ही साथ संग्रहण अवधि भी बढ़ जायेगी।
- **अरहर:** दाने कड़े होने की अवस्था में है एवम् वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव से भावी वातावरण के तापमान में वृद्धि होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भवना है। फली छेदक से बचाव हेतु इमीडाक्लोप्रीड या इनडोक्साकार्ब 1 मि°ली° प्रति 2.5 लीटर पानी में घोल बना कर एक पंक्ति छोड़कर 10 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करनें से लारवा को मार देता हे पर पत्तो से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के सम्पर्क में नहीं आ पाता है । अतः गैस बनने वाली दवा जैसे डीडीभीपी 0.5 मि°ली° प्रति ली° पानी में तैयार घोल का छिड़कवा करेने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के सम्पर्क में आकर प्रभावित हो जायेगा। माईट्स एवम् लाही के लिए डायमेथेएट 30 इसी 2 मि°ली° और अकारीसाईड जैसे डाकोफाॅल 18.5 इसी 2.5 मि°ली° य ब्लिस्टर बीटल हेतु साईपरमेथ्रिन 10 इसी 1 मि°ली° प्रति ली° पानी या लेम्डा साइलाथ्रिन 5 इसी 1 मि°ली° प्रति ली° पानीय स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफाॅल 18.5 इसी 2.5 मि°ली° या आॅक्सीडेमोटान मिथाईल 25 इसी का 2 मि°ली° या डायमेथेएट 30 इसी 2 मि°ली° प्रति ली° पानी में तैयार धोल का छिड़काव एक पंक्ति छोड़ कर 10 दिनो के अेतराल पर करें।
- **सब्जियाँ :** बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी, टमाटर, फ्रेंचबीन एवम् मिर्च के बीचड़े में कीटों का प्रकोप होने पर जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें या कूॅंग फू या कराटे 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल का व्यवहार करें। झुल्सा में कन्टाफ ,हेक्साकोनाजोलद्ध 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2.5 ग्राम या थयोफिनेटमिथाईल,रोकोद्ध या टाॅपसिन 1 ग्राम शाम के वक्त दे। टमाटर की फसल में मोजैक रोग की रोकथाम के लिये पौध रोपाई के समय जड़ को इमीडाक्लोरपीड 0.25 प्रतिशत् का घोल (2.5 ग्रा0 दवा/ली0) पानी में डुबो कर रोपाई करेंे। टमाटर, बैंगन- तापमान में उतार-चढ़ाव के कारण कुछ बीमारी के बढ़ने की आशंका अधिक है जैसे मुर्झा बीमारी जिसके रोकथाम हेतु 100 मिलीग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन एवम् 1.5 ग्राम काॅपर आक्सीक्लोराइड प्रति लीटर पानी में घेाल बनाकर छिड़काव करें। पत्तियों के मूड़ने की स्थिती में सुपर डी या न्यूराल डी 1 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के दर से व्यवहार करें। फली /तना छेदक कीट (माॅथ)से बचाव हेतु 6-8 फेरोमान ट्रैप प्रति एकड़ के दर से व्यवहार करें। प्याज: समय से बोयी गई प्याज फसल में थ्रिप्स के आक्रमण से बचाव हेतु कार्बेरिल 2 ग्राम प्रति लीटर पानी किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसे टीपोल 1 मिलीलीटर प्रति लीटर घोल में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें। पत्ती झुलसा (स्टेम फायलम ब्लाईट) में कन्टाफ ,हेक्साकोनाजोलद्ध 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल में मिलाकर छिड़काव शाम के वक्त दे। गोभीवर्गीय फसल में हीरा पीठ कीट, मटर एवम् टमाटर में फल छेदक से बचाव हेतु 5-6 प्रपंश प्रति एकड़ के हिसाब से लगाएॅं।मौसम ठंड़ एवम् देर तक कुहासा रहने से पौधशाला पर काफी असर पड़ता है। सम्भव हो तो प्लास्टि से ढ़ंकें एवम् धुआं करें।
- **उद्यानीकी:** मृदा की नमी संरक्षण तथा खरपतवार की रोकथाम के लिए पौघे के चारो तरफ प्लास्टिक फिल्म से ढक दें। फलदार बृक्षों के तने पर जमीन से 3 से 5 फीट उँचाई तक बोर्डोपेस्ट/बोर्डोपेंट की पुताई करें । केले में बगल से निकलने वाली चैडे पत्ते की पुत्तियों को सावधानीपूर्वक काटकर निकाल दें तथा 50-60 ग्राम यूरिया तथा 100-125 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाष्श प्रति पौध की दर से दें। लीची वृक्षों की जड़ों के पास 20 से 30 सें0मी0 गहराई की मिट्टी निकाल कर खुला छोड़ दें तथा सूखने पर 40 से 50 कि0ग्रा0 गोबर/कम्पोष्ट खाद, 2 कि0ग्रा0 एस एस पी तथा 2 कि0ग्रा0 एम ओ पी प्रति वृक्ष की दर से मिट्टी में मिलाकर भराई करें तथा पौधों की सिंचाई कर दें। फलदार पौधे को ड्रीप विधी द्वारा सिंचाई करें। फलदार पौधें अमरुद, अनार, नीबू, बेर, में फूल एवं फल की अवस्था पर कीट एवं रोग नियेत्रण हेतु मालाथियन 2 मि.ली. + मेन्कोजेब 2-3 ग्राम प्रति लीटर के दर से छिडकाब करें। 15 दिन के अंतराल पर दोहराए। केले में सिगाटोका, सिगार एन्ड तथा एन्थ्रेक्नोज रोग का प्रकोप होने पर ब्लाइटाक्स 50 से उपचार करें। आम के बाग में प्रथम दस वर्षों तक अधिक लाभ के लिए अंतः फसल के रूप मे सब्जी जैसे.-आलू, मिर्च, टमाटर तथा फूल जैसे. ग्लेेेडिओलस की खेती करें। मंजर लगने या फूल आने से पूर्व कीटों के प्रभाव को खत्म करने के लिये मेटासिस्टाॅक्स 25 ई सी तरल दवा का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें । परिपक्व पेड़ के लिये 18-20 लीटर पानी की आवश्यकता होती है ।
- **आम/लीची/कटहल:** इस मौसम में मंजर लगने या फूल आने से पूर्व कीटों के प्रभाव को खत्म करने के लिये मेटासिस्टाॅक्स 25 ई सी 1 मिलीलीटर या कूंग-फू या कराटे या मटाडोर (लेम्डा साइलोथ्रीन) 2 ग्राम के साथ आधा ग्राम कारबेंडाजिम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आमः पौधों को दीमक ,कीटद्ध से बचाव के लिए मुख्य तना में जमीन से 1-2 मीटर उपर तक चूना से रंगाई करें तथा कीट नाशी मोनोक्रोटोफाॅस तथा इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें । इस मौसम में मिली बग के बच्चे जमीन से निकलकर तनों पर चढ़ने से रोकने हेतु जमीन से 1-2 मीटर की ऊंचाई पर तने के चारों तरफ 30 से मी चैड़ी अल्काथीन की पटटी लपेटे एवम् आस-पास की मिटअी की खुदाई करें जिससे अण्डे नष्ट हो जायेंगें।कटहलः फुलावस्था में एन्थ्रेक्सनोज से बचाव हेतु ब्लाइटोक्स 50 या ब्लू कपर 2.5 ग्राम के दर से व्यवहार करें। फरवरी माह में पेड़ों पर फूल नहीं आने पर यूरिया 5 ग्राम या पोटाश्यिम् नाईट्रेट 10 ग्राम प्रति लीटर के दर से धोल का छिड़काव करें। परिपक्व पेड़ के लिये 18-20 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। गेंदा. पुष्प सड़न से बचाव हेतु बेभिस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में तैयार घोल का छिड़काव करें।
- **पशु पालनः** वर्तमान मौसम में खुर-मुॅंह पका या खुरहा या भजहा या अलबा (एफ° एम° डी°) बीमारी की बहुत सम्भावना है। गोजाती में इसके लक्षण हैं- शरीर में कंपन, तेज बुखार(1050 फारेनहाइट), खुर एवम् मुॅंह में घाव, अधिक लार का निकलना, दूध उत्पादन में भारी कमी, शरीर में रोओं का खड़ा होना आदि लक्षण दिखें तो पशु-चिकित्सक की सलाह से टीकाकरण करावें। मुॅंह में फिटकिरी या पोटाश के घोल से तथा खुर को फिनाईल के धोल से धो दें। तत्पश्चात् मुॅंह एवम् जीभ में बोरोग्लीसरीन पेंट लगावें। खुर के बीच में तारपीन का तेल डालें ताकि पिल्लू से सुरक्षा हो सके । एन्टीबायोटिक्स की सुई भी दें। पशु-चिकित्सक की सलाह अवश्य लें। मुर्गियों एवम् बकरियों में होने वाले चेचक एवम् पी पी आर से बचाव के लिए टीकाकरन करें।
- **मछली पालन:** पानी के तापमान में कमी होने के कारण तालाब में अधिक संख्या में मछली होने से बहुत हीं अधिक घातक एवम् संक्रामक बीमारी लाल धब्बा(ई°यू°एस°) होने की सम्भावना हैं। अतः बचाव हेतु *1* लीटर एक्रानीम *10* एक्स *100* लीटर पानी में घोल बनाकर तालाब के सभी स्थान पर सामान मात्रा में छिड़काव करें।

बिनोद कुमार
तकनिकी पदाधिकारी

Rain and snow Temperature Rainfall Humidity Wind direction Air pressure CO2

नजरुससलाम
सह निदेशक

Azado Ka Amrit Mahotsav

GRAMIN KRISHI MAUSAM SEWA

BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY

(ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)

India Meteorological Departmet, Meteorological centre Ranchi receive forecast data from Ministry of Earth Science New Delhi Government of India for Zonal Research Station Darisai under Birsa Agricultural University for the next 120 hours

And

Agromet Advisory Service Bulletin for *Saraikela-Kharsawan*

(28 Jan-01 Feb 2023)

Ref :27/2023/GKMS/Darisai(08)
Date: 27.01.2023
Web : bauranchi.org

Ph No. –9334729740(m)
binodranchi@gmail.com

Azado Ka Amrit Mahotsav

मौसम इकाई / दिनांक	28 जनवरी	29 जनवरी	30 जनवरी	31 जनवरी	01 फरवरी
वर्षा (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (^0C)	32	31	31	32	32
न्यूनतम तापमान (^0C)	16	15	15	17	15
आकाश मे बादल की स्थिति	1	1	1	3	1
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत्)	64	53	52	52	48
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत्)	31	30	26	27	22
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	4	4	2	4	3
हवा बहाव की दिशा	299	33	143	299	303
साप्ताहिक वर्षापात एवं तापमान अनुभूति (01 - 07 Feb 2023 तक)					
साप्ताहिक वर्षापात दृष्टिकोण	वास्तविक वर्षा– n/a (मि० मी०/दिन)	सामान्य वर्षा– n/a मि० मी०/दिन)		प्रतिशत विचलन :– (n/a) n/a ;श्रेणी (n/a)	
वास्तविक अधिकतम तापमान दृष्टिकोण	वास्तविक अधिकतम तापमान –- 27.88^{0}C/दिन	सामान्य अधिकतम तापमान –- 26.21^{0}C/दिन		विसंगति :– (+) 1.67; श्रेणी (औसत से ऊपर)	
वास्तविक न्यूनतम तापमान दृष्टिकोण	वास्तविक न्यूनतम तापमान – 11.35^{0}C/दिन	सामान्य न्यूनतम तापमान –- 12.02^{0}C/दिन		विसंगति :– (+) 1.30; श्रेणी (औसत के बराबर	

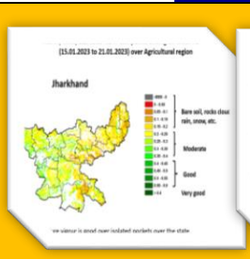

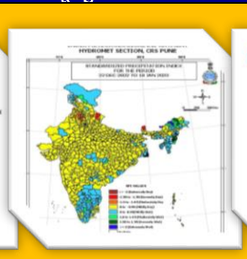

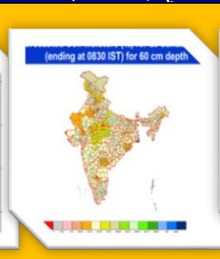

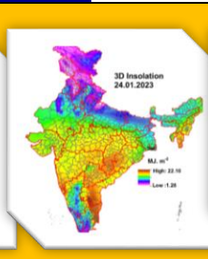

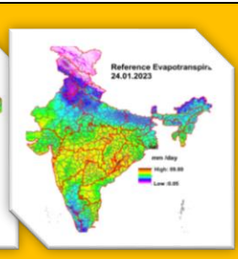

उपरोक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

(क्षेत्रीय अनुसन्धान केंद्र, दारीसाई, पूर्वी सिंहभूम) बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, रांची

मान्यकृत वनस्पति अंतर सूचकांक (21.01.2023 तक)- झारखण्ड राज्य में आछादित वनस्पति का प्रतिशित क्षेत्रफल एवं इसका घनत्व बढ़ने के साथ हीं साथ फसल, वनस्पति वद्धि अवस्था में है मानकीकृत वर्षापात सुचकांक (19.01.203 तक)- के अनुसार मृदा की नमी अवस्था मध्यम सूखे की ओर अंकित हो रहा है अतः उन स्थानों पर मौसम एवं प्राकृतिक संसंधनों की अनुकूलता के सुसार सिंचाई की व्यवस्था की जा सकती है | मृदा आद्रता सुचंकाक(29.01.2023 तक) के अनुसार मृदा में नमी की स्तिथि 15 प्रतिशत के करीब रहने कि संभावना जताई गयी है | अंत: मौसम के अनुरूप रबी फसलों एवं सब्जियों में आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई का प्रबंध किया जा सकता है | सूर्य विकिर(24.01.2023 तक) के अनुसार सभी स्थानों पर मध्यम से अधिक मान की ओर दर्शा रहा है | जिसका तात्पर्य आसमान में उस अवधी तक आंशिक बादल रहने तथा मृदा नमी क्षेत्र जल धारण क्षमता सामान्य होने के कारण वातावरण में नमी की भी मात्रा सामान्य है एवं विकिरण का मान मध्यम से अधिक मान कि और है,जिसका सीधा अनुमान संदर्व वाष्पन- उत्सर्जन (24.01.2023 तक) के पूरक है | जिसका तात्पर्य वातावरण एवं मृदा से नमी का वात्पोत्सर्जन का मान माध्यम से अधिक के बीच दर्शा रहा है | अतः फिलहाल खड़े फसल एवं सब्जयों जल प्रबंधन की आवश्यकता अनुसार ध्यान दिया जाना चाहिए | समुचित फसल प्रबंधन करें | सभी कृषि से सम्बंधित क्रिआकलापों को मौसम के सनुरूप करें | सुझाव का अनुपालन करें |

संकेत : मौसम पूर्वानुमान के अनुसार मौसम साफ़ रहने की संभावना है | दिन एवम् रात के तापमान में बढ़त तथा सुबह एवम् शाम के वक्त हवा मे नमी आगे के दिनों में घटने की सम्भावना है । अतः आद्रता में उतार-चड़ाव होना, विषाणु, रोगाणु एवं कीट का बढ़ना सुनिश्चित है। अतः निकाई-गंड़ाई, सिंचाई, दवा का छिड़काव एवम् खाद का भुरकाव व सुगमता को देखते हुए कार्य को पूरा करें। सब्जियो जैसे- आलू, टमाटर, बैंगन, गोभी, मटर एवम् फलों में तथा मवेशियों के बच्चों पर रात एवम् सुबह ठंड़ एवम् कुहासे के प्रतिकूलता से बचाव हेतु उपाय करें। अतः निचे दिये गए सभी सुझाव मौसम को घ्यान में रखते हुए करें। | **साप्ताहिक वर्षापात एवं तापमान अनुभूति (01 - 07 Feb 2023 तक) के अनुसार मौसम शुष्क एवं मृदा में नमी सामान्य से निचे रहने की संभावना है | फसल में सिंचाई की आवश्यकता है | रबी फसल की खेती हेतु निकाई एवं गुराई के लिए उपयुक्त समय है | मृदा में उपलब्ध नमी एवं तापमान की अनिभूति को देखते हुए सिंचाई की सुविधा होने पर चारा फसल जैसे – मक्का, बरसीम, लुसर्न एवं जई की बुवाई की जा सकती है | सिंचाई, दवा का छिडकाव , खाद का भुरकाव किया जा सकता है |**

| विशेष के पूर्वानुमान और चेतावनी के लिए MAUSAM APP, कृषि परमर्श के लिए MEGHDOOT APP और ठनका चेतावनी के लिए DAMINI APP डाउनलोड करें

सामान्य सलाह फिलहाल फसलों में नमी बरकरार रखने के लिये आवश्यकतानुसार सिंचाई मौसम को देखते हुए करें। छोटे फलदार पौधों, नर्सरी के पौधों एवम् नगदी सब्जी वाले फसलों को पोलीथिन, बाॅक्स का टाट सें सुबह के वक्त बाॅंधें और दिन में टाटियाॅ हटा लें। हाल में लगाए गए सब्जी पौधशाला का रात में पोलीथिन या पेपर से ढ़क दें। धान बिचड़ों की अच्छी बढ़त हेतु गांबर खाद के साथ 4 कि० ग्रा ० प्रति 400 वर्ग मीटर या 10 डिसमिल के हिसाब से 12-15 दिन के बिचड़ो में भुरकाव करें। तलाब में मछलियों को ठंड से बचाव हेतु 100 कि० ग्रा ० बुझा चूना प्रति एकड़ तालाव के क्षेत्रफल के हिसाब से एवम् 1-1.5 मी० पानी की गहराई को बरकरा रखें। बाछियों एवम् मेंमनो को बोरे से लपेट दें। रखे गये पशुओं के स्थान में आग एवम् धुआॅं करें। मेंमनों में नियमोनिया पी पी आर बीमारी से बचाव के लिये टीकाकरण करें। आहार में मित्रल मिक्सचर दें। मुर्गियों के रहने के स्थान को गर्म करने हेतु पोलीथिन या बोरे से ढ़क कर हवा आवागन हेतु प्रबध करें। **सब्जियां:** मिर्च में थ्रिप्स और घुन के संक्रमण के प्रबंधन के लिए, 2% नीम के तेल के इमल्शन या 1 ग्राम थियामेथोक्साम प्रति 5 लीटर या डायफेनथियूरोन @ 1.5 ग्राम या प्रोफेनोफॉस @ 2 मिली प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें। शाम के समय नर्सरी, नई फलों की फसल और सब्जियों की फसलों में सिंचाई करें। कम तापमान के प्रभाव से बचने के लिए गोभीवर्गीय फसलों में हाल ही में लगाई गई फसलों को रात के समय सेल्यूलोज पेपर से ढक दें। युवा उद्यानिकी एवं पुष्पीय पौधों को कम तापमान से बचाने के लिए थैचिंग करें | फूलगोभी, पत्तागोभी, ब्रोकली, नोलखोल, बैंगन, मूली, फलियाँ, पत्तेदार सब्जियों में हल्की सिंचाई करें। **तिलहन:** सरसों की फसल में जब 10-15 प्रतिशत पौधे में 30 एफिड्स प्रति 10 सेमी ऊपरी शूट में संक्रमित होने पर एफिड के हमले से नियंत्रित करने के लिए क्लोरपाइरीफॉस 20% ईसी @ 1 मिली प्रति लीटर पानी के घोल या मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी @ 3 मिली या थियामेथोक्साम 25 डब्ल्यूजी @ 3 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी के घोल का साफ मौसम की स्थिति में छिड़काव करें । **अनाज:** धान की नर्सरी को कम तापमान से बचाने के लिए गीली क्यारियों में गोबर की खाद की एक पतली परत लगायें ताकि क्यारियां अपेक्षाकृत गर्म रहें। **पालतू जानवर:** मवेशियों को आश्रय के अंदर रखें। सुबह ठंड से बचाव के लिए युवा मवेशियों की विशेष देखभाल करें। शेल्टर फ्लोर पर स्ट्रॉ लिटर फैलाएं जो गर्म प्रदान करता है। रात के समय पर्दे और बिजली के बल्ब देकर कुक्कुट पक्षियों की रक्षा करें।

- **गरमा धान-** बिचड़ो में पत्तियो के शीर्ष पर जलने एवम् भूरे रंग दिखने पर पोटाश का भुरकाव कर शाम के वक्त सिंचाई करें तथा पलवार चढ़ाएॅं। जनवरी माह में पौधशाला के लिये गरमा धान रोपाइ् हेतु बीजों (मघ्यम अवधिः 120-125 दिन वाले किस्म जैसे-आइ आर, 64 डी आर टी 1, आइ आर, 64 सुखा, अभिशेख, के आर एच 2, पैक 801, 807जनवरी माह में पौधशाला के लिये गरमा धान रोपाइ् हेतु बीजों (मघ्यम अवधिः 120-125 दिन वाले किस्म जैसे-आइ आर, 64 डी आर टी 1, आइ आर, 64 सुखा, अभिशेख, के आर एच 2, पैक 801, 807, एराई तेज (गोल्ड), सहभागी, बिरसा विकास धान 203 बिरसा विकास सुगन्ध 1 इत्यादि को संग्रहित कर पौधशाला में बीज गिराने से दो से तीन दिन पहले भींगे जूट के बोरे में अंकुरित होने के लिये छोड़ दें। खेत में ही रोपाई हेतु जमीन के 1/10 वें भाग में पौधशाला बनायें। मिट्टी में 100 किलोग्राम गोबर + 10-12 किलोग्राम करंज या नीम की खल्ली प्रति 400 वर्ग मीटर (एकड का 1/10 वाॅं भाग)के दर से मिलाकर बिल्कुल कदवा कर लें एवम् पौधशाला की जमीन को कुछ ऊँचा रखेंं। अंतिम तैयारी के वक्त 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के हिसाब से 2 ग्राम बैविस्टीन या ट्राइसाइक्लोजोल (बीम) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर हीं उपयोग करें। 8 किलोग्राम यूरिया + 25 किलोग्राम एस एस पी + 6 किलोग्राम एम ओ पी प्रति 400 वर्ग मीटर(एकड का 1/10 वाॅं भाग) के दर से पौधशाला हेतुं रसायनिक खाद का व्यवहार करें। 12 दिन के बिचड ¬ो में 1-1.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 400 स्कायर मीटर या प्रति 10 डिसीमल के दर से भुरकाव करें।
- **चना:** वातावरण में हल्के बदलाव के कारण फली छेदक कीटं का प्रकोप बढ़ता देखा जा रहा है। बचाव हेतु इमीडाक्लोप्रीड 1 मि. ली. या एसीफेट 75 प्रतिशत् घु° प° का 4 ग्राम के हिसाब से प्रति 10 लीटर पानी में घोल बनाकर फलियों के निकल जाने पर छिडकाव करें। तीव्रता को कम करने के लिये फेनवलरेट 5 प्रतिशत् धूल या मिथाइल पाराथियन 2 प्रतिशत् धूल का 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के बक्त भुरकाव करें। फली छेदक कीट कीट निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंश 3-4 संख्या प्रति एकड़ उन खेंतों में जहाँ प्रति पौधों में 15-20 प्रतिशत् फूल खिल गये हों प्रबंधन हेतु परभक्षी चिडियों को आमंत्रण करने के लिये लकड़ी से निर्मित ज् अक्षर आकार के पक्षी बसेरा की व्यवस्था खेत के विभिन्न जगहों पर करें।
- **सरसों:** कैप्सुल बनने की अवस्था में इस मौसम लाही/थीरप्स/छोटी मक्खी कीटों का प्रकोप होने की प्रबल सम्भावना है। अतः नित्य फसल की निगरानी करते रहें। कीट की संख्या न्यूनतम् क्रांतिक संख्या से अधिक रहने पर दवा का छिड़काव करें। प्रारम्भिक अवस्था में प्रभावित भाग को काट कर नष्ट कर दें। लाही कीटों का प्रकोप से बचाव हेतु आक्सी डेमोटान मिथयल 1 मिलीलीटर या डायमेथेयेट 30 इ सी 1 मिलीलीटर या थयमेथेक्सजाम 25 डबलू जी 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में तैयार घोल का छिड़काव दोपहर के वक्त 15 दिलों के अन्तराल पर करें। कीट निगरानी हेतु 5-7 संख्या में फेरोमोन प्रपंश ;पिली चिपचिपाहाट वालीद्ध प्रति एकड़ के हिसाब से लगाए। पत्र लांछन के लिए 2.5 ग्राम मैंकोजेब एम 45 एवम् श्वेत हरदा बीमारी के लिए 1.5 ग्राम क्रिलेक्सील या बोर्डेक्स मिक्सचर या 0.25 प्रतिशत् काॅपर आक्सीक्लोराइड प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।
- **मटर:** फलों की संख्या में बढ़ोतरी के लिये 20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी घोल बना कर लत्तर पर छिड़काव करें साथ ही साथ पाले से भी बचाव होता है। दाने बनने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार-चढ़ाव के साथ-साथ तापमान में हल्की धटत एवम् बढ़त की सम्भावना होने के कारण चूर्णिल आसिता बीमारी एवम् कीटों के प्रकोप बढने की आशंका बहुत अधिक है अतः निवारण हेतु कैराथेन 0.1(1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत् (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें। प्रारोह कीट भेदक से बचाव के लिये थायमेट 10 जी 4 किलोग्रीम प्रति एकड़ के दर से व्यवहार कर सिंचाई कर दें। खड़ी फसल में मालाथियन 58 ई सी का 1 मिलीलीटर या कार्बेरिल 50 प्रतिशत् घु° प° का 2 ग्रीम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। फली भेदक से बचाव के लिये मोनेक्रोटोफास 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनो के अंतराल पर छिड़काव करें।
- **तीसी:** पौधें अभी फूलावस्था में है। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूॅंद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइप्रोडीआॅन 25 प्रतिशत् डब्लू पी + कार्बेंडाजिम 25 प्रतिशतडब्लू पी जिसका बाजारु नाम डबल डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्रा° प्रति ली° में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सप्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूॅंद बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमाॅर्फ 80 प्रतिशत ई सी (केलिक्सीन) का 5 मि°ली° प्रति 10 ली° पानी या केराथेन 1 मि°ली° प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।
- **गेंहूँ : दसम्बर माह में गेंहूँ की बुआई(45-50 दिन) के लिए सामयिक सलाह -** अधिक्तम् कल्ले से लेकर तने मे गांठ बनने की अवस्था में है। खरपतवार की निकाई एवम् डच हो द्वारा गुडाई कर के ही दूसरी बार सिंचाई करने हेतु प्रबंध मौसम को दंख कर करें। इस अवस्था में निकाई-गुडाई के बाद सिंचाई कर दें तथा साथ हीं साथ सिंचाई के एक से दो दिन बाद शेष एक तिहाई, 30 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ की दर से बुआई के 40-45 दिन बाद उपरिवेशन करें। मरे हुए कल्ले के दिखने पर इमीडाक्लोप्रीड 1 मि. ली. प्रति 3 लीटर पानी या एसीटामीप्रीड 20 प्रतिशत् घु°प° का 0.5 ग्राम प्रति 8 लीटर पानी में घोल बनाकर छिटकाव करें। **नवम्बर माह में गेंहूँ की बुआई (65-70 दिन) के लिए सामयिक सलाह** - गाभा बनने से लेकर बाली निकलने की अवस्था में है। तीसरी सिंचाई का प्रबंध करें। बुआई के 60-65 दिन पहले या फूल आने से पहले 30 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड के दर से उपरिवेशन करें। अगर पत्तियों पर छोटे अण्डाकार पीला-भूरा छोटे धब्बे (पत्र अंगमारी) दिखाई देने पर डायथेन एम 45 (मेन्कोजेब) या डाइफोलटन(केपटाफाल) या इण्डोफिल एम-45 (मेन्कोजेब) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। यदि पत्तियों पर छोटे-छोटे रंगबिरंगे धब्बे दिखने पर (हरदा) प्रोपिकोनाजोल (0.1 प्रतिशत्) का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे। **नवम्बर माह में गेंहूँ की बुआई (85-90 दिन) के लिए सामयिक सलाह** -बाली में फूल आने की अवस्था है। यह अति महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में खेतों में नमी की कमी होने पर दानो का संख्या एवम् आकार में क्रमशः कमी होे जाती है। दिन के तापमान एवम् आर्द्रता में औसतन वृद्धि अनावृत कण्ड (संक्रमित पौधों की सभी बालियाॅं काले चूर्ण का रुप लेती है एवम् दाने नहीं बनते हैं) के संक्रमणता में सहायक होता है। अतः दिखाई देने पर संक्रमित पौधें को सवधनी पूर्वक तोड़ कर भूमी में गाड़ दें या जला दें।
- **आलू:** देर से बोये गये आलू, कंद वृद्धि अवस्था से में है पिछेती अंगमारी से ग्रसित पौधे दिख रहें हों, तो बचाव के लिये 1.5 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड या डाइफोलटन(केपटाफाल) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे । कंद में इस वक्त कजरा पिल्लू का प्रकोप होने की अधिक सम्भावना है। अतः बचाव हेतु कीटनाशी जैसे क्लोरपाइरीफाॅस 20 ई सा का 2 मिलीलीटर प्रति लीटर के दर से छिड़काव पौधें के जड़ो के पास छिड़काव करें। परिपक्व कंद को निकालने से पहले पौधे के उपरी भाग को काट कर 10 दिनों तक इसी अवस्था में छोड़ दें ताकि कंद के छिलके मोटे होने के साथ ही साथ संग्रहण अवधि भी बढ़ जायेगी।
- **अरहर:** दाने कड़े होने की अवस्था में है एवम् वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव से भावी वातावरण के तापमान में वृद्धि होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भवना है। फली छेदक से बचाव हेतु इमीडाक्लोप्रीड या इनडोक्साकार्ब 1 मि°ली° प्रति 2.5 लीटर पानी में घोल बना कर एक पंक्ति छोड़कर 10 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करनें से लारवा को मार देता हे पर पत्तो से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के सम्पर्क में नहीं आ पाता है । अतः गैस बनने वाली दवा जैसे डीडीभीपी 0.5 मि°ली° प्रति ली° पानी में तैयार घोल का छिड़कवा करेने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के सम्पर्क में आकर प्रभावित हो जायेगा। माईट्स एवम् लाही के लिए डायमेथेएट 30 इसी 2 मि°ली° और अकारीसाईड जैसे डाकोफाॅल 18.5 इसी 2.5 मि°ली° य ब्लिस्टर बीटल हेतु साईपरमेथ्रिन 10 इसी 1 मि°ली° प्रति ली° पानी या लेम्डा साइलाथ्रिन 5 इसी 1 मि°ली° प्रति ली° पानीय स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफाॅल 18.5 इसी 2.5 मि°ली° या आॅक्सीडेमोटान मिथाईल 25 इसी का 2 मि°ली° या डायमेथेएट 30 इसी 2 मि°ली° प्रति ली° पानी में तैयार धोल का छिड़काव एक पंक्ति छोड़ कर 10 दिनो के अेतराल पर करें।
- **सब्जियाँ :** बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी, टमाटर, फ्रेंचबीन एवम् मिर्च के बीचड़े में कीटों का प्रकोप होने पर जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें या कूॅंग फू या कराटे 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल का व्यवहार करें। झुल्सा में कन्टाफ ,हेक्साकोनाजोलद्ध 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2.5 ग्राम या थयोफिनेटमिथाईल,रोकोद्ध या टाॅपसिन 1 ग्राम शाम के वक्त दे। टमाटर की फसल में मोजैक रोग की रोकथाम के लिये पौध रोपाई के समय जड़ को इमीडाक्लोरपीड 0.25 प्रतिशत् का घोल (2.5 ग्रा0 दवा/ली0) पानी में डुबो कर रोपाई करेें। टमाटर, बैंगन- तापमान में उतार-चढ़ाव के कारण कुछ बीमारी के बढ़ने की आशंका अधिक है जैसे मुर्झा बीमारी जिसके रोकथाम हेतु 100 मिलीग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन एवम् 1.5 ग्राम काॅपर आक्सीक्लोराइड प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पत्तियों के मूड़ने की स्थिती में सुपर डी या न्यूराल डी 1 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के दर से व्यवहार करें। फली /तना छेदक कीट (माॅथ)से बचाव हेतु 6-8 फेरोमान ट्रैप प्रति एकड़ के दर से व्यवहार करें। प्याज: समय से बोयी गई प्याज फसल में थ्रिप्स के आक्रमण से बचाव हेतु कार्बरिल 2 ग्राम प्रति लीटर पानी किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसै टीपोल 1 मिलीलीटर प्रति लीटर घोल में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें। पत्ती झुलसा (स्टेम फायलम ब्लाईट) में कन्टाफ ,हेक्साकोनाजोलद्ध 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल में मिलाकर छिड़काव शाम के वक्त दे। गोभीवर्गीय फसल में हीरा पीठ कीट, मटर एवम् टमाटर में फल छेदक से बचाव हेतु 5-6 प्रपंश प्रति एकड़ के हिसाब से लगाएॅं।मौसम ठंड़ एवम् देर तक कुहासा रहने से पौधशाला पर काफी असर पड़ता है। सम्भव हो तो प्लास्टि से ढ़ंकें एवम् धुआं करें।
- **उद्यानीकी:** मृदा की नमी संरक्षण तथा खरपतवार की रोकथाम के लिए पौधे के चारो तरफ प्लास्टिक फिल्म से ढक दें। फलदार बृक्षों के तने पर जमीन से 3 से 5 फीट उँचाई तक बोर्डोपेस्ट/बोर्डोपेंट की पुताई करें । केले में बगल से निकलने वाली चैडे पत्ते की पुत्तियों को सावधानीपूर्वक काटकर निकाल दें तथा 50-60 ग्राम यूरिया तथा 100-125 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाष्श प्रति पौध की दर से दें। लीची वृक्षों की जड़ों के पास 20 से 30 सें0मी0 गहराई की मिट्टी निकाल कर खुला छोड़ दें तथा सूखने पर 40 से 50 कि0ग्रा0 गोबर/कम्पोष्ट खाद, 2 कि0ग्रा0 एस एस पी तथा 2 कि0ग्रा0 एम ओ पी प्रति वृक्ष की दर से मिट्टी में मिलाकर भराई करें तथा पौधों की सिंचाई कर दें। फलदार पौधे को ड्रीप विधी द्वारा सिंचाई करें। फलदार पौधें अमरुद, अनार, नीबू, बेर, में फूल एवं फल की अवस्था पर कीट एवं रोग नियेत्रण हेतु मालाथियन 2 मि.ली. + मेन्कोजेब 2-3 ग्राम प्रति लीटर के दर से छिडकाब करें। 15 दिन के अंतराल पर दोहराए। केले में सिगाटोका, सिगार एन्ड तथा एन्थ्रेक्नोज रोग का प्रकोप होने पर ब्लाइटाक्स 50 से उपचार करें। आम के बाग में प्रथम दस वर्षोंं तक अधिक लाभ के लिए अंतः फसल के रूप मे सब्जी जैसे.-आलू, मिर्च, टमाटर तथा फूल जैसे. ग्लेेडिओलस की खेती करें। मंजर लगने या फूल आने से पूर्व कीटों के प्रभाव को खत्म करने के लिये मेटासिस्टाॅक्स 25 ई सी तरल दवा का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें । परिपक्व पेड़ के लिये 18-20 लीटर पानी की आवश्यकता होती है ।
- **आम/लीची/कटहल:** इस मौसम में मंजर लगने या फूल आने से पूर्व कीटों के प्रभाव को खत्म करने के लिये मेटासिस्टाॅक्स 25 ई सी 1 मिलीलीटर या कूंग-फू या कराटे या मटाडोर (लेम्डा साइलोथ्रीन) 2 ग्राम के साथ आधा ग्राम कारबेंडाजिम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आमः पौधों को दीमक ,कीटद्ध से बचाव के लिए मुख्य तना में जमीन से 1-2 मीटर उपर तक चूना से रंगाई करें तथा कीट नाशी मोनोक्रोटोफाॅस तथा इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें । इस मौसम में मिली बग के बच्चे जमीन से निकलकर तनों पर चढ़ने से रोकने हेतु जमीन से 1-2 मीटर की ऊंचाई पर तने के चारों तरफ 30 से मी चैड़ी अल्काथीन की पटटी लपेटे एवम् आस-पास की मिटअी की खुदाई करें जिससे अण्डे नष्ट हो जायेंगें।कटहलः फुलावस्था में एन्थ्रेक्सनोज से बचाव हेतु ब्लाइटोक्स 50 या ब्लू कपर 2.5 ग्राम के दर से व्यवहार करें। फरवरी माह में पेड़ों पर फूल नहीं आने पर यूरिया 5 ग्राम या पोटाश्यिम् नाईट्रेट 10 ग्राम प्रति लीटर के दर से धोल का छिड़काव करें। परिपक्व पेड़ के लिये 18-20 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। गेंदा. पुष्प सड़न से बचाव हेतु बेभिस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में तैयार घोल का छिड़काव करें।
- **पशु पालन:** वर्तमान मौसम में खुर-मुॅंह पका या खुरहा या भजहा या अलबा (एफ° एम° डी°) बीमारी की बहुत सम्भावना है। गोजाती में इसके लक्षण हैं- शरीर में कंपन, तेज बुखार(1050 फारेनहाइट), खुर एवम् मुॅंह में घाव, अधिक लार का निकलना, दूध उत्पादन में भारी कमी, शरीर में रोओं का खड़ा होना आदि लक्षण दिखें तो पशु-चिकित्सक की सलाह से टीकाकरण करावें। मुॅंह में फिटकिरी या पोटाश के घोल से तथा खुर को फिनाईल के धोल से धो दें। तत्पश्चात् मुॅंह एवम् जीभ में बोरोग्लीसरीन पेंट लगावें। खुर के बीच में तारपीन का तेल डालें ताकि पिल्लू से सुरक्षा हो सके । एन्टीबायोटिक्स की सुई भी दें। पशु-चिकित्सक की सलाह अवश्य लें। मुर्गियों एवम् बकरियों में होने वाले चेचक एवम् पी पी आर से बचाव के लिए टीकाकरन करें।
- **मछली पालन:** पानी के तापमान में कमी होने के कारण तालाब में अधिक संख्या में मछली होने से बहुत हीं अधिक घातक एवम् संक्रामक बीमारी लाल धब्बा(ई°यू°एस°) होने की सम्भावना हैं। अतः बचाव हेतु *1* लीटर एक्रानीम *10* एक्स *100* लीटर पानी में घोल बनाकर तालाब के सभी स्थान पर सामान मात्रा में छिड़काव करें।

Rain and snow Temperature Rainfall Humidity Wind direction Air pressure CO2

बिनोद कुमार
तकनिकी पदाधिकारी

नजरुससलाम
सह निदेशक

Azado Ka Amrit Mahotsav

GRAMIN KRISHI MAUSAM SEWA

BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY

(ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)

India Meteorological Departmet, Meteorogical centre Ranchi receive forecast data from Ministry of Earth Science New Delhi Government of India for Zonal Research Station Darisai under Birsa Agricultural University for the next 120 hours

And

Agromet Advisory Service Bulletin for *West Singhbhum*

(28 Jan-01 Feb 2023)

Ref :27/2023/GKMS/Darisai(08)
Date: 27.01.2023
Web : bauranchi.org

Ph No. –9334729740(m)
binodranchi@gmail.com

Azado Ka Amrit Mahotsav

मौसम इकाई / दिनांक	28 जनवरी	29 जनवरी	30 जनवरी	31 जनवरी	01 फरवरी
वर्षा (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (^{0}C)	32	31	31	32	32
न्यूनतम तापमान (^{0}C)	16	15	15	17	15
आकाश मे बादल की स्थिति	1	1	1	3	1
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत्)	64	54	53	53	49
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत्)	30	30	27	27	23
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	5	4	2	5	4
हवा बहाव की दिशा	275	41	138	288	281

साप्ताहिक वर्षापात एवं तापमान अनुभूति (01 - 07 Feb 2023 तक)			
साप्ताहिक वर्षापात दृष्टिकोण	वास्तविक वर्षा– n/a (मि० मी०/दिन)	सामान्य वर्षा– n/a मि० मी०/दिन)	प्रतिशत विचलन – (n/a) n/a ;श्रेणी (n/a)
वास्तविक अ धकतम तापमान दृष्टिकोण	वास्तविक अ धकतम तापमान –- 27.88^{0}C/दिन	सामान्य अ धकतम तापमान –- 26.21^{0}C/दिन	विसंगति ;– (+) 1.67; श्रेणी (औसत से ऊपर)
वास्तविक न्यूनताम तापमान दृष्टिकोण	वास्तविक न्यूनताम तापमान – 11.35^{0}C/दिन	सामान्य न्यूनताम तापमान –- 12.02^{0}C/दिन	विसंगति ;– (+) 1.30; श्रेणी (औसत के बराबर

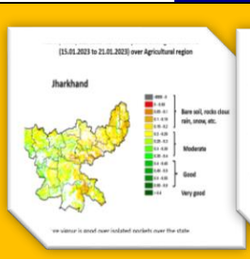

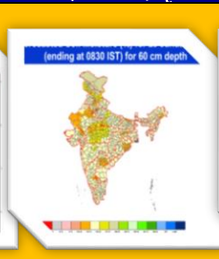

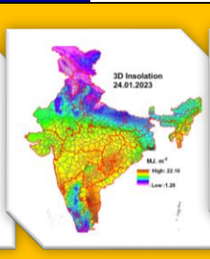

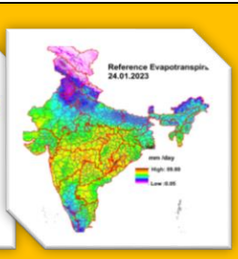

उपरोक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

(क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्र , दारीसाई, पूर्वी सिंहभूम) बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, काँके, राँची

मान्यकृत वनस्पति अंतर सूचकांक (21.01.2023 तक)- झारखण्ड राज्य में आछादित वनस्पति का प्रतिशित क्षेत्रफल एवं इसका घनत्व बढ़ने के साथ हीं साथ फसल, वनस्पति वद्धि अवस्था में है मानकीकृत वर्षापात सुचकांक (19.01.203 तक)- के अनुसार मृदा की नमी अवस्था मध्यम सूखे की ओर अंकित हो रहा है अतः उन स्थानों पर मौसम एवं प्राकृतिक संसंधनों की अनुकूलता के सुसार सिंचाई की व्यवस्था की जा सकती है | मृदा आद्रता सुचंकाक(29.01.2023 तक) के अनुसार मृदा में नमी की स्तिथि 15 प्रतिशत के करीब रहने कि संभावना जताई गयी है | अंत: मौसम के अनुरूप रबी फसलों एवं सब्जियों में आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई का प्रबंध किया जा सकता है | सूर्य विकिर(24.01.2023 तक) के अनुसार सभी स्थानों पर मध्यम से अधिक मान की ओर दर्शा रहा है | जिसका तात्पर्य आसमान में उस अवधी तक आंशिक बादल रहने तथा मृदा नमी क्षेत्र जल धारण क्षमता सामान्य होने के कारण वातावरण में नमी की भी मात्रा सामान्य है एवं विकिरण का मान मध्यम से अधिक मान कि और है,जिसका सीधा अनुमान संदर्व वाष्पन- उत्सर्जन (24.01.2023 तक) के पूरक है | जिसका तात्पर्य वातावरण एवं मृदा से नमी का वात्पोत्सर्जन का मान माध्यम से अधिक के बीच दर्शा रहा है | अतः फिलहाल खड़े फसल एवं सब्जयों जल प्रबंधन की आवश्यकता अनुसार ध्यान दिया जाना चाहिए | समुचित फसल प्रबंधन करें | सभी कृषि से सम्बंधित क्रिआकलापों को मौसम के सनुरूप करें | सुझाव का अनुपालन करें |

संकेत : मौसम पूर्वानुमान के अनुसार मौसम साफ़ रहने की संभावना है | दिन एवम् रात के तापमान में बढ़त तथा सुबह एवम् शाम के वक्त हवा मे नमी आगे के दिनों में घटने की सम्भावना है । अतः आद्रता में उतार-चड़ाव होना, विषाणु, रोगाणु एवं कीट का बढ़ना सुनिश्चित है। अतः निकाई-गंड़ाई, सिंचाई, दवा का छिड़काव एवम् खाद का भुरकाव व सुगमता को देखते हुए कार्य को पूरा करें। सब्जियो जैसे- आलू, टमाटर, बैंगन, गोभी, मटर एवम् फलों में तथा मवेशियों के बच्चों पर रात एवम् सुबह ठंड़ एवम् कुहासे के प्रतिकूलता से बचाव हेतु उपाय करें। अतः निचे दिये गए सभी सुझाव मौसम को घ्यान में रखते हुए करें। | **साप्ताहिक वर्षापात एवं तापमान अनुभूति (01 - 07 Feb 2023 तक) के अनुसार मौसम शुष्क एवं मृदा में नमी सामान्य से निचे रहने की संभावना है | फसल में सिंचाई की आवश्यकता है | रबी फसल की खेती हेतु निकाई एवं गुराई के लिए उपयुक्त समय है | मृदा में उपलब्ध नमी एवं तापमान की अनिभूति को देखते हुए सिंचाई की सुविधा होने पर चारा फसल जैसे – मक्का, बरसीम, लुसर्न एवं जई की बुवाई की जा सकती है | सिंचाई, दवा का छिडकाव , खाद का भुरकाव किया जा सकता है |**

| विशेष के पूर्वानुमान और चेतावनी के लिए MAUSAM APP, कृषि परमर्श के लिए MEGHDOOT APP और ठनका चेतावनी के लिए DAMINI APP डाउनलोड करें

सामान्य सलाह फिलहाल फसलों में नमी बरकरार रखने के लिये आवश्यकतानुसार सिंचाई मौसम को देखते हुए करें। छोटे फलदार पौधों, नर्सरी के पौधों एवम् नगदी सब्जी वाले फसलों को पोलीथिन, बाॅंस का टाट सें सुबह के वक्त बाॅंधें और दिन में टाटियाॅ हटा लें। हाल में लगाए गए सब्जी पौधशाला केा रात में पोलीथिन या पेपर से ढ़क दें। धान बिचड़ों की अच्छी बढ़त हेतु गांबर खाद के साथ 4 कि० ग्रा ० प्रति 400 वर्ग मीटर या 10 डिसमिल के हिसाब से 12-15 दिन के बिचड़ो में भुरकाव करें। तलाब में मछलियों को ठंड से बचाव हेतु 100 कि० ग्रा ० बुझा चूना प्रति एकड़ तालाव के क्षेत्रफल के हिसाब से एवम् 1-1.5 मी० पानी की गहराई को बरकरा रखें। बाछियों एवम् मेंमनो को बोरे से लपेट दें। रखे गये पशुओं के स्थान में आग एवम् धुआॅं करें। मेंमनों में नियमोनिया पी पी आर बीमारी से बचाव के लिये टीकाकरण करें। आहार में मित्रल मिक्सचर दें। मुर्गियों के रहने के स्थान को गर्म करने हेतु पोलीथिन या बोरे से ढ़क कर हवा आवागन हेतु प्रबध करें। **सब्जियां:** मिर्च में थ्रिप्स और घुन के संक्रमण के प्रबंधन के लिए, 2% नीम के तेल के इमल्शन या 1 ग्राम थियामेथोक्साम प्रति 5 लीटर या डायफेनथियूरोन @ 1.5 ग्राम या प्रोफेनोफॉस @ 2 मिली प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें। शाम के समय नर्सरी, नई फलों की फसल और सब्जियों की फसलों में सिंचाई करें। कम तापमान के प्रभाव से बचने के लिए गोभीवर्गीय फसलों में हाल ही में लगाई गई फसलों को रात के समय सेल्यूलोज पेपर से ढक दें। युवा उद्यानिकी एवं पुष्पीय पौधों को कम तापमान से बचाने के लिए थैचिंग करें | फूलगोभी, पत्तागोभी, ब्रोकली, नोलखोल, बैंगन, मूली, फलियाँ, पत्तेदार सब्जियों में हल्की सिंचाई करें। **तिलहन:** सरसों की फसल में जब 10-15 प्रतिशत पौधे में 30 एफिड्स प्रति 10 सेमी ऊपरी शूट में संक्रमित होने पर एफिड के हमले से नियंत्रित करने के लिए क्लोरपाइरीफॉस 20% ईसी @ 1 मिली प्रति लीटर पानी के घोल या मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी @ 3 मिली या थियामेथोक्साम 25 डब्ल्यूजी @ 3 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी के घोल का साफ मौसम की स्थिति में छिड़काव करें । **अनाज:** धान की नर्सरी को कम तापमान से बचाने के लिए गीली क्यारियों में गोबर की खाद की एक पतली परत लगायें ताकि क्यारियां अपेक्षाकृत गर्म रहें। **पालतू जानवर:** मवेशियों को आश्रय के अंदर रखें। सुबह ठंड से बचाव के लिए युवा मवेशियों की विशेष देखभाल करें। शेल्टर फ्लोर पर स्ट्रॉ लिटर फैलाएं जो गर्म प्रदान करता है। रात के समय पर्दे और बिजली के बल्ब देकर कुक्कुट पक्षियों की रक्षा करें।

- **गरमा धान-** बिचड़ो में पत्तियो के शीर्ष पर जलने एवम् भूरे रंग दिखने पर पोटाश का भुरकाव कर शाम के वक्त सिंचाई करें तथा पलवार चढ़ाएॅं। जनवरी माह में पौधशाला के लिये गरमा धान रोपाइ् हेतु बीजों (मघ्यम अवधिः 120-125 दिन वाले किस्म जैसे-आइ आर, 64 डी आर टी 1, आइ आर, 64 सुखा, अभिशेख, के आर एच 2, पैक 801, 807जनवरी माह में पौधशाला के लिये गरमा धान रोपाइ् हेतु बीजों (मघ्यम अवधिः 120-125 दिन वाले किस्म जैसे-आइ आर, 64 डी आर टी 1, आइ आर, 64 सुखा, अभिशेख, के आर एच 2, पैक 801, 807, एराई तेज (गोल्ड), सहभागी, बिरसा विकास धान 203 बिरसा विकास सुगन्ध 1 इत्यादि को संग्रहित कर पौधशाला में बीज गिराने से दो से तीन दिन पहले भींगे जूट के बोरे में अंकुरित होने के लिये छोड़ दें। खेत में ही रोपाई हेतु जमीन के 1/10 वें भाग में पौधशाला बनायें। मिट्टी में 100 किलोग्राम गोबर + 10-12 किलोग्राम करंज या नीम की खल्ली प्रति 400 वर्ग मीटर (एकड का 1/10 वाॅं भाग)के दर से मिलाकर बिल्कुल कदवा कर लें एवम् पौधशाला की जमीन को कुछ ऊँचा रखेंे। अंतिम तैयारी के वक्त 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के हिसाब से 2 ग्राम बैविस्टीन या ट्राइसाइक्लोजोल (बीम) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर हीं उपयोग करें। 8 किलोग्राम यूरिया + 25 किलोग्राम एस एस पी + 6 किलोग्राम एम ओ पी प्रति 400 वर्ग मीटर(एकड का 1/10 वाॅं भाग) के दर से पौधशाला हेतुं रसायनिक खाद का व्यवहार करें। 12 दिन के बिचड ¬ो में 1-1.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 400 स्कायर मीटर या प्रति 10 डिसीमल के दर से भुरकाव करें।
- **चना:** वातावरण में हल्के बदलाव के कारण फली छेदक कीटं का प्रकोप बढ़ता देखा जा रहा है। बचाव हेतु इमीडाक्लोप्रीड 1 मि. ली. या एसीफेट 75 प्रतिशत् घु° प° का 4 ग्राम के हिसाब से प्रति 10 लीटर पानी में घोल बनाकर फलियों के निकल जाने पर छिडकाव करें। तीव्रता को कम करने के लिये फेनवलरेट 5 प्रतिशत् धूल या मिथाइल पाराथियन 2 प्रतिशत् धूल का 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के बक्त भुरकाव करें। फली छेदक कीट कीट निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंश 3-4 संख्या प्रति एकड़ उन खेंतों में जहाँ प्रति पौधों में 15-20 प्रतिशत् फूल खिल गये हों प्रबंधन हेतु परभक्षी चिडियों को आमंत्रण करने के लिये लकड़ी से निर्मित ज् अक्षर आकार के पक्षी बसेरा की व्यवस्था खेत के विभिन्न जगहों पर करें।
- **सरसों:** कैप्सुल बनने की अवस्था में इस मौसम लाही/थीरप्स/छोटी मक्खी कीटों का प्रकोप होने की प्रबल सम्भावना है। अतः नित्य फसल की निगरानी करते रहें। कीट की संख्या न्यूनतम् क्रांतिक संख्या से अधिक रहने पर दवा का छिड़काव करें। प्ररम्भिक अवस्था में प्रभावित भाग को काट कर नष्ट कर दें। लाही कीटों का प्रकोप से बचाव हेतु आक्सी डेमोटान मिथयल 1 मिलीलीटर या डायमेथेयेट 30 इ सी 1 मिलीलीटर या थयमेथेक्सजाम 25 डबलू जी 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में तैयार घोल का छिड़काव दोपहर के वक्त 15 दिलों के अन्तराल पर करें। कीट निगरानी हेतु 5-7 संख्या में फेरोमोन प्रपंश ;पिली चिपचिपाहाट वालीद्ध प्रति एकड़ के हिसाब से लगाए। पत्र लांछन के लिए 2.5 ग्राम मैंकोजेब एम 45 एवम् श्वेत हरदा बीमारी के लिए 1.5 ग्राम क्रिलेक्सील या बोर्डेक्स मिक्सचर या 0.25 प्रतिशत् काॅपर आक्सीक्लोराइड प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।
- **मटर:** फलों की संख्या में बढ़ोतरी के लिये 20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी घोल बना कर लत्तर पर छिड़काव करें साथ ही साथ पाले से भी बचाव होता है। दाने बनने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार-चढ़ाव के साथ-साथ तापमान में हल्की धटत एवम् बढ़त की सम्भावना होने के कारण चूर्णिल आसिता बीमारी एवम् कीटों के प्रकोप बढने की आशंका बहुत अधिक है अतः निवारण हेतु कैराथेन 0.1(1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत् (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें। प्ररोह कीट भेदक से बचाव के लिये थायमेट 10 जी 4 किलोग्रीम प्रति एकड़ के दर से व्यवहार कर सिंचाई कर दें। खड़ी फसल में मालाथियन 58 ई सी का 1 मिलीलीटर या कार्बेरिल 50 प्रतिशत् घु° प° का 2 ग्रीम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। फली भेदक से बचाव के लिये मोनेक्रोटोफास 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनो के अंतराल पर छिड़काव करें।
- **तीसी:** पौधें अभी फूलावस्था में है। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूॅंद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइप्रोडीआॅन 25 प्रतिशत् डब्लू पी + कार्बेडाजिम 25 प्रतिशतडब्लू पी जिसका बाजारु नाम डबल डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्रा° प्रति ली° में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सम्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूॅंद बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमाॅर्फ 80 प्रतिशत ई सी (केलिक्सीन) का 5 मि°ली° प्रति 10 ली° पानी या केराथेन 1 मि°ली° प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।
- **गेहूँ : दसम्बर माह में गेहूँ की बुआई(45-50 दिन) के लिए सामयिक सलाह -** अधिक्तम् कल्ले से लेकर तने मे गांठ बनने की अवस्था में है। खरपतवार की निकाई एवम् डच हो द्वारा गुडाई कर के ही दूसरी बार सिंचाई करने हेतु प्रबंध मौसम को दंख कर करें। इस अवस्था में निकाई-गुडाई के बाद सिंचाई कर दें तथा साथ हीं साथ सिंचाई के एक से दो दिन बाद शेष एक तिहाई, 30 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ की दर से बुआई के 40-45 दिन बाद उपरिवेशन करें। मरे हुए कल्ले के दिखने पर इमीडाक्लोप्रीड 1 मि. ली. प्रति 3 लीटर पानी या एसीटामीप्रीड 20 प्रतिशत् घु°प° का 0.5 ग्राम प्रति 8 लीटर पानी में घोल बनाकर छिटकाव करें। **नवम्बर माह में गेहूँ की बुआई (65-70 दिन) के लिए सामयिक सलाह** - गाभा बनने से लेकर बाली निकलने की अवस्था में है। तीसरी सिंचाई का प्रबंध करें। बुआई के 60-65 दिन पहले या फूल आने से पहले 30 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड के दर से उपरिवेशन करें। अगर पत्तियों पर छोटे अण्डाकार पीला-भूरा छोटे धब्बे (पत्र अंगमारी) दिखाई देने पर डायथेन एम 45 (मेन्कोजेब) या डाइफोलटन(केपटाफाल) या इण्डोफिल एम-45 (मेन्कोजेब) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। यदि पत्तियों पर छोटे-छोटे रंगबिरंगे धब्बे दिखने पर (हरदा) प्रोपिकोनाजोल (0.1 प्रतिशत्) का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे। **नवम्बर माह में गेहूँ की बुआई (85-90 दिन) के लिए सामयिक सलाह** -बाली में फूल आने की अवस्था है। यह अति महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में खेतों में नमी की कमी होने पर दानो का संख्या एवम् आकार में क्रमशः कमी होे जाती है। दिन के तापमान एवम् आर्द्रता में औसतन वृद्धि अनावृत कण्ड (संक्रमित पौधों की सभी बालियाॅं काले चूर्ण का रुप लेती है एवम् दाने नहीं बनते हैं) के संक्रमणता में सहायक होता है। अतः दिखाई देने पर संक्िरमत पौधें को सवधनी पूर्वक तोड़ कर भूमी में गाड़ दें या जला दें।
- **आलू:** देर से बोये गये आलू, कंद वृद्धि अवस्था से में है पिछेती अंगमारी से ग्रसित पौधे दिख रहें हों, तो बचाव के लिये 1.5 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड या डाइफोलटन(केपटाफाल) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे । कंद में इस वक्त कजरा पिल्लू का प्रकोप होने की अधिक सम्भावना है। अतः बचाव हेतु कीटनाशी जैसे क्लोरपाइरीफाॅस 20 ई सा का 2 मिलीलीटर प्रति लीटर के दर से छिड़काव पौधें के जड़ो के पास छिड़काव करें। परिपक्व कंद को निकालने से पहले पौधे के उपरी भाग को काट कर 10 दिनों तक इसी अवस्था में छोड़ दें ताकि कंद के छिलके मोटे होने के साथ ही साथ संग्रहण अवधि भी बढ़ जायेगी।
- **अरहर:** दाने कड़े होने की अवस्था में है एवम् वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव से भावी वातावरण के तापमान में वृद्धि होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भवना है। फली छेदक से बचाव हेतु इमीडाक्लोप्रीड या इनडोक्साकार्ब 1 मि°ली° प्रति 2.5 लीटर पानी में घोल बना कर एक पंक्ति छोड़कर 10 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करनें से लारवा को मार देता हे पर पत्तो से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के सम्पर्क में नहीं आ पाता है । अतः गैस बनने वाली दवा जैसे डीडीभीपी 0.5 मि°ली° प्रति ली° पानी में तैयार घोल का छिडकवा करेने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के सम्पर्क में आकर प्रभावित हो जायेगा। माईट्स एवम् लाही के लिए डायमेथेएट 30 इसी 2 मि°ली° और अकारीसाईड जैसे डाकोफाॅल 18.5 इसी 2.5 मि°ली° य ब्लिस्टर बीटल हेतु साईपरमेथ्रिन 10 इसी 1 मि°ली° प्रति ली° पानी या लेम्डा साइलाथ्रिन 5 इसी 1 मि°ली° प्रति ली° पानीय स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफाॅल 18.5 इसी 2.5 मि°ली° या आॅक्सीडेमोटान मिथाईल 25 इसी का 2 मि°ली° या डायमेथेएट 30 इसी 2 मि°ली° प्रति ली° पानी में तैयार धोल का छिड़काव एक पंक्ति छोड़ कर 10 दिनो के अेतराल पर करें।
- **सब्जियाँ :** बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी, टमाटर, फ्रेंचबीन एवम् मिर्च के बीचड़े में कीटों का प्रकोप होने पर जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें या कूॅंग फू या कराटे 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल का व्यवहार करें। झुल्सा में कन्टाफ ,हेक्साकोनाजोलद्ध 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2.5 ग्राम या थयोफिनेटमिथाईल,रोकोद्ध या टाॅपसिन 1 ग्राम शाम के वक्त दे। टमाटर की फसल में मोजैक रोग की रोकथाम के लिये पौध रोपाई के समय जड़ को इमीडाक्लोरपीड 0.25 प्रतिशत् का घोल (2.5 ग्रा0 दवा/ली0) पानी में डुबो कर रोपाई करेंे। टमाटर, बैंगन- तापमान में उतार-चढ़ाव के कारण कुछ बीमारी के बढ़ने की आशंका अधिक है जैसे मुर्झा बीमारी जिसके रोकथाम हेतु 100 मिलीग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन एवम् 1.5 ग्राम काॅपर आक्सीक्लोराइड प्रति लीटर पानी में घेाल बनाकर छिड़काव करें। पत्तियों के मूड़ने की स्थिती में सुपर डी या न्यूराल डी 1 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के दर से व्यवहार करें। फली /तना छेदक कीट (माॅथ)से बचाव हेतु 6-8 फेरोमान ट्रैप प्रति एकड़ के दर से व्यवहार करें। प्याज: समय से बोयी गई प्याज फसल में थ्रिप्स के आक्रमण से बचाव हेतु कार्बरिल 2 ग्राम प्रति लीटर पानी किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसै टीपोल 1 मिलीलीटर प्रति लीटर घोल में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें। पत्ती झुलसा (स्टेम फायलम ब्लाईट) में कन्टाफ ,हेक्साकोनाजोलद्ध 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल में मिलाकर छिड़काव शाम के वक्त दे। गोभीवर्गीय फसल में हीरा पीठ कीट, मटर एवम् टमाटर में फल छेदक से बचाव हेतु 5-6 प्रपंश प्रति एकड़ के हिसाब से लगाएॅं।मौसम ठंड़ एवम् देर तक कुहासा रहने से पौधशाला पर काफी असर पड़ता है। सम्भव हो तो प्लास्टि से ढ़ंकें एवम् धुआं करें।
- **उद्यानीकी:** मृदा की नमी संरक्षण तथा खरपतवार की रोकथाम के लिए पौघे के चारो तरफ प्लास्टिक फिल्म से ढक दें। फलदार बृक्षों के तने पर जमीन से 3 से 5 फीट उँचाई तक बोर्डोपेस्ट/बोर्डोपेंट की पुताई करें । केले में बगल से निकलने वाली चैडे पत्ते की पुत्तियों को सावधानीपूर्वक काटकर निकाल दें तथा 50-60 ग्राम यूरिया तथा 100-125 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाष्श प्रति पौध की दर से दें। लीची वृक्षों की जड़ों के पास 20 से 30 सें0मी0 गहराई की मिट्टी निकाल कर खुला छोड़ दें तथा सूखने पर 40 से 50 कि0ग्रा0 गोबर/कम्पोष्ट खाद, 2 कि0ग्रा0 एस एस पी तथा 2 कि0ग्रा0 एम ओ पी प्रति वृक्ष की दर से मिट्टी में मिलाकर भराई करें तथा पौधों की सिंचाई कर दें। फलदार पौधे को ड्रीप विधी द्वारा सिंचाई करें। फलदार पौधें अमरुद, अनार, नीबू, बेर, में फूल एवं फल की अवस्था पर कीट एवं रोग नियेत्रण हेतु मालाथियन 2 मि.ली. + मेन्कोजेब 2-3 ग्राम प्रति लीटर के दर से छिडकाब करें। 15 दिन के अंतराल पर दोहराए। केले में सिगाटोका, सिगार एन्ड तथा एन्थ्रेक्नोज रोग का प्रकोप होने पर ब्लाइटाक्स 50 से उपचार करें। आम के बाग में प्रथम दस वर्षोंं तक अधिक लाभ के लिए अंतः फसल के रूप मे सब्जी जैसे.-आलू, मिर्च, टमाटर तथा फूल जैसे. ग्लेेंेडिओलस की खेती करें। मंजर लगने या फूल आने से पूर्व कीटों के प्रभाव को खत्म करने के लिये मेटासिस्टाॅक्स 25 ई सी तरल दवा का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें । परिपक्व पेड़ के लिये 18-20 लीटर पानी की आवश्यकता होती है ।
- **आम/लीची/कटहलः** इस मौसम में मंजर लगने या फूल आने से पूर्व कीटों के प्रभाव को खत्म करने के लिये मेटासिस्टाॅक्स 25 ई सी 1 मिलीलीटर या कूंग-फू या कराटे या मटाडोर (लेम्डा साइलोथ्रीन) 2 ग्राम के साथ आधा ग्राम कारबेंडाजिम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आमः पौधों को दीमक ,कीटद्ध से बचाव के लिए मुख्य तना में जमीन से 1-2 मीटर उपर तक चूना से रंगाई करें तथा कीट नाशी मोनोक्रोटोफाॅस तथा इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें । इस मौसम में मिली बग के बच्चे जमीन से निकलकर तनों पर चढ़ने से रोकने हेतु जमीन से 1-2 मीटर की ऊंचाई पर तने के चारों तरफ 30 से मी चैड़ी अल्काथीन की पटटी लपेटे एवम् आस-पास की मिटअी की खुदाई करें जिससे अण्डे नष्ट हो जायेंगें।कटहलः फुलावस्था में एन्थ्रेक्सनोज से बचाव हेतु ब्लाइटोक्स 50 या ब्लू कपर 2.5 ग्राम के दर से व्यवहार करें। फरवरी माह में पेड़ों पर फूल नहीं आने पर यूरिया 5 ग्राम या पोटाश्यिम् नाईट्रेट 10 ग्राम प्रति लीटर के दर से धोल का छिड़काव करें। परिपक्व पेड़ के लिये 18-20 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। गेंदा. पुष्प सड़न से बचाव हेतु बेभिस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में तैयार घोल का छिड़काव करें।
- **पशु पालनः** वर्तमान मौसम में खुर-मुॅंह पका या खुरहा या भजहा या अलबा (एफ° एम° डी°) बीमारी की बहुत सम्भावना है। गोजाती में इसके लक्षण हैं- शरीर में कंपन, तेज बुखार(1050 फारेनहाइट), खुर एवम् मुॅंह में घाव, अधिक लार का निकलना, दूध उत्पादन में भारी कमी, शरीर में रोओं का खड़ा होना आदि लक्षण दिखें तो पशु-चिकित्सक की सलाह से टीकाकरण करावें। मुॅंह में फिटकिरी या पोटाश के घोल से तथा खुर को फिनाईल के धोल से धो दें। तत्पश्चात् मुॅंह एवम् जीभ में बोरोग्लीसरीन पेंट लगावें। खुर के बीच में तारपीन का तेल डालें ताकि पिल्लू से सुरक्षा हो सके । एन्टीबायोटिक्स की सुई भी दें। पशु-चिकित्सक की सलाह अवश्य लें। मुर्गियों एवम् बकरियों में होने वाले चेचक एवम् पी पी आर से बचाव के लिए टीकाकरन करें।
- **मछली पालन:** पानी के तापमान में कमी होने के कारण तालाब में अधिक संख्या में मछली होने से बहुत हीं अधिक घातक एवम् संक्रामक बीमारी लाल धब्बा(ई°यू°एस°) होने की सम्भावना हैं। अतः बचाव हेतु ***1*** लीटर एक्रानीम ***10*** एक्स ***100*** लीटर पानी में घोल बनाकर तालाब के सभी स्थान पर सामान मात्रा में छिड़काव करें।

Rain and snow Temperature Rainfall Humidity Wind direction Air pressure CO2

बिनोद कुमार
तकनिकी पदाधिकारी

नजरुससलाम
सह निदेशक